प्रवासी लेखिकाओं के उपन्यासों में स्त्री जीवन का यथार्थ : एक अध्ययन

(Woman life's perspective in expatriate authoress's novel: A study)

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

को पीएच.डी हिन्दी उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध

की संशोधित रूपरेखा

शोधकर्त्री

चंचल मेहरा

हिन्दी (कला संकाय)

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

शोध निर्देशिका

डॉ. सुमन पलासिया

सहायक–आचार्य हिन्दी साहित्य

श्री माणिक्यलाल वर्मा राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

सत्र– 2017

प्रस्तावित शोध कार्य की संशोधित रूपरेखा

1. Name of Scholar in (English)	:	Chanchal Mehra
In (Hindi)	:	**चंचल मेहरा**
Title of research in (English)	:	(Woman life's perspective in expatriate authoresses novel: A study)
2. In (Hindi)	:	प्रवासी लेखिकाओं के उपन्यासों में स्त्री जीवन का यथार्थ : एक अध्ययन
3. Location		
A- Department where the work to be done	:	हिन्दी विभाग श्री माणिक्यलाल वर्मा राजकीय महाविद्यालय,भीलवाड़ा

4. प्रस्तावित शोध का परिचय, महत्त्व व उद्देश्य

(Introduction, importance and Objective of proposed reasearch) :–

शोध परिचय –

इक्कीसवीं सदी वैज्ञानिक युग होने के कारण गगनचुम्बी उन सफलताओं तक पहुंच चुकी है, जहां जाने की कल्पना भी मानव ने नहीं की थी। सामाजिक परिवर्तन का एक अद्वितीय उदाहरण इस सदी में देखने को मिलता हैं। इस सदी में वैश्विक, सामाजिक व वैयक्तिक स्तर पर भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण, वैज्ञानिक, तकनीकी, सूचना प्रौद्योगिक आदि क्षेत्रों में तीव्रता से परिवर्तन हमारे समक्ष आया हैं। सामाजिक परिवर्तन के सजीव व यथार्थ चित्रण की अभिव्यक्ति का मूल दस्तावेज साहित्य होता है। साहित्य का संस्कृति से घनिष्ठ संबंध होता है, इस कारण संस्कृति के हर पक्ष का चित्रण साहित्य में द्रष्टव्य होता है।

इक्कीसवीं सदी आधुनिकता से उत्तर आधुनिकता की ओर अग्रसर हो रही है, इस निरन्तर व बदलते परिप्रेक्ष्य में अचानक ही विभिन्न चुनौतियां साहित्य के समक्ष आ गई हैं। साहित्य द्वारा यथार्थ को प्रतिबिम्बित करने व समाज को उचित दिशा की ओर ले जाने का कार्य साहित्यकार का होता है। इस सदी की मुख्य विधा के रूप में कथा साहित्य का प्रचलन अधिक बढ़ा है। उपन्यास व कहानी में बदलते दृष्टिकोण की जांच–परख के साथ कथानकों की अभिव्यक्ति दी जा रही हैं। कथा साहित्य में उपन्यास व कहानी विधा के माध्यम से मानव अस्तित्व की मुखरित होती अभिव्यक्ति समाज के समक्ष प्रस्तुत की जाती रही है। जिसका संबंध यथार्थवाद से बताया जाता है। इसी यथार्थवाद को आधार बनाकर साहित्य की नींव रखी जाती है।

वर्तमान सदी के कथा साहित्य पर दृष्टि डालने से यह ज्ञात होता है कि इस सदी के यथार्थ के धरातल पर स्त्री विमर्श, दलित विमर्श व आदिवासी विमर्श साहित्य की मुख्य धारा के रूप प्रवाहित हो रहा है। जिसमें स्त्री विमर्श का मुद्दा समाज व साहित्य में अपनी विशिष्ट उपस्थिति दर्ज करवा चुका है। स्त्री विमर्श स्त्री के जीवन का यथार्थ है, वह यथार्थ जिससे समाज में स्त्री की वास्तविक स्थिति का पता चलता है। इस सदी पर दृष्टि डाली जाए तो आज की स्त्री समाज के हर क्षेत्र में

हस्तक्षेप करती हुई पुरूष के समकक्ष आसीन होती नजर आ रही है। इक्कीसवीं सदी के साहित्य में महिला लेखिकाओं का एक बड़ा समूह इस परिवर्तन में सहयोगी प्रतिशोधी नहीं अपितु प्रतिरोधी लेखन के फलस्वरूप स्त्री विमर्श को साहित्य के केन्द्र में ले आया है। महिला लेखिकाओं के इस बड़े समूह में नेतृत्व की श्रृंखला को देखा जाए तो प्रवासी भारतीय लेखिकाओं की फौज भी नवीन विचारों की ढाल व लेखनी की तलवार से समकक्षता के इस युद्ध में वर्तमान विसंगतियों पर संघर्ष करती नजर आ रही हैं।

प्रवासी भारतीय लेखिकाएं स्त्री जीवन के संघर्ष को मनोरंजन व अपवाद नहीं मानती उनके अनुसार यह तो सदियों से पितृसत्तात्मक समाज के अधीन जीवनयापन कर रही वर्तमान स्त्री की चुनौती है। यह स्त्री स्वयं को भोग्या नहीं बनने देना चाहती है और देह के इस भेद को खारिज करती है। सदियों के मौन की अभिव्यक्ति, नैतिक व पैतृक व्यवस्थाओं को नष्ट–भ्रष्ट कर स्त्री अधिकारों को अनुकूल आश्रय देने का माध्यम ही स्त्री जीवन का यथार्थ है। अब तक प्राप्त अवधारणाओं के आधार पर स्त्रीवादी चिन्तन से तात्पर्य–स्त्रीवादी चिन्तन राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक समानता का सिद्धान्त है। स्त्रीवादी चिन्तन उत्पीड़न के खिलाफ स्त्री जाति की तीखी प्रतिक्रिया हैं। स्त्रीवादी चिन्तन स्त्री की इच्छा व अधिकारों की प्राप्ति हेतु आंदोलन हैं।

साठ से सत्तर के दशक में आए स्त्रीवादी चिन्तन और वर्तमान सदी के स्त्रीवादी विचारों में बहुत बड़ा परिवर्तन साहित्य में देखने को मिलता है। पहले स्त्री स्वतंत्रता के अधिकारों के लिए लड़ती थी और आज स्त्री संघर्ष ने नयी करवट ली अब लड़ाई स्त्री पर पुरुष के अधिकार, शोषण, असमानता व स्त्री पुरुष समकक्षता की है। आज का स्त्रीवादी चिन्तन प्राचीन परम्पराओं की प्राचीरों से मुक्ति पाकर उन बेड़ियों को तार–तार करना चाहता है जो पितृसत्तात्मक समाज ने केवल स्त्रियों के लिए बनाई। मुक्ति का यह स्वर साहित्य में दोहरे नैतिक मापदंडों, अंतर्विरोधों, रूढ़ मान्यताओं पर विचार करने का वैश्विक चिन्तन बन गया है। फिर इस वैश्विक चिन्तन में प्रवासी भारतीय लेखिकाएं कैसे पीछे रह सकती हैं।

वे भारतीय संस्कारों से अवश्य पूरित है, पर बात जब न्याय कि हो तो उनका हृदय भी ईश्वर के समक्ष बड़े मनोबल के साथ गुहार कर बैठता है कि आखिर स्त्री अपने बारे में क्यों न सोचें ?, क्यों स्त्री को ही अनुशासन, मर्यादा व नियंत्रण से परे जाने पर समाज द्वारा नैतिकता का पाठ पढ़ाया जाता है ?, क्यों स्त्री को ही अबला समझ निर्जीव तुल्य शोषण किया जाता है ?, सृष्टि के विकास में बराबर के सहयोगी होने पर भी स्त्री को ही निम्नता के तराजू पर क्यों तोला जाता है ?, क्यों स्त्री पुरुष समान नहीं ?, क्यों स्त्री की अपनी पहचान नहीं ? जब इन्हीं प्रश्नों को स्त्री ने पुरुष प्रधान

समाज के समक्ष उठाया तो प्रत्युत्तर में स्त्री चिन्तन का नवीन स्वरूप साहित्य में उभर कर आ गया। प्लेटो, जॉन स्टुअर्ट मिल एवं मार्क्स जैसे प्रसिद्ध दार्शनिकों ने भी स्त्री को पुरुष के समकक्ष रखने की चेष्टा की थी।

अब तक का प्रवासी महिला लेखन स्त्रीवादी चिन्तन से ओत–प्रोत रहा है, यह स्त्री का स्त्री द्वारा स्त्री के लिए लेखन है। जो बौद्धिकता, आधुनिकता, समसामयिकता व युगबोध से परिपूरित है। उच्च कोटि का यह लेखन वैविध्यपूर्ण है, जिसमें समाज के यथार्थ को साहित्य के कैनवास पर कला की तूलिका और भावों के रंगों से उकेरा गया है।

प्रवासी उपन्यासों का दर्पण देखे तो उनके नारी पात्र स्वयं के यथार्थ व अस्तित्व पर अनुसंधान करते नजर आते हैं। ये उपन्यास मुक्ति व संघर्ष के संधिकाल पर खड़ी ऐसी स्त्री को समाज के समक्ष ला रहा है, जो बराबरी के अधिकार की मांग कर रही है।

आरम्भिक स्त्रीवादी चिन्तन का यथार्थ शोषण, पीड़ा, संघर्ष का परिचायक रहा है, परन्तु वर्तमान स्त्री लेखन ने तो स्त्री चिन्तन की परिभाषा को ही बदल दिया है। स्त्रीवादी चिन्तन अब विचारों व संघर्ष का अन्तर्द्वन्द्व नहीं अपितु पुरुष प्रधान समाज में अपने अस्तित्व की खोज है। इस खोज के मार्ग भले ही भारतीय व पाश्चात्य हो पर मंजिल एक ही है, चाहें वे भारतीय स्त्री हो या हजारों कोस दूर प्रवासी भारतीय स्त्री।

प्रवासी भारतीय महिला लेखन कुछ समय से चर्चा का विषय बना हुआ है। भारतीय महिला लेखिकाओं की तरह ही प्रवासी महिला लेखिकाओं द्वारा अपने उपन्यासों में स्त्रीवादी चिन्तन संबंधी विभिन्न पक्षों को रखा गया है। प्रस्तावित शोध के माध्यम से इन्हीं पक्षों को समेटने व सहेजने का कार्य किया जाएगा।

प्रस्तावित शोध का महत्व (Importance of proposed research):–

किसी भी समाज की स्थिति को ज्ञात करने का सबसे सरल माध्यम है, उस समाज की स्त्री की स्थिति को जानना। समाज में स्त्री की दशा सदैव एक–सी रहे यह कहना सर्वथा न्यायोचित नहीं होगा। सदियों से स्त्री का मौन, संघर्ष व यातना के क्षितिज पर आकर ठहर–सा गया। उसकी चुप्पी को उसकी कमजोरी समझा जाने लगा। अपने मौन की अभिव्यक्ति को शोषण की पीड़ा, बंधनों की छटपटाहट से मुक्त करने का स्वर लम्बे अरसे बाद स्त्री ने उठाया। स्त्री जीवन का वास्तविक यथार्थ

मुख्य रूप से समाज में स्त्री मुक्ति का प्रयास है, जिसका माध्यम साहित्य है। प्रवासी लेखिकाओं का साहित्य स्त्री को पीड़िता व शोषिता कहने की उपेक्षा करता है तथा स्त्री पुरुषों के संबंधों पर चिन्तन करने हेतु प्रेरित करता है। स्त्रीवादी चिन्तन वर्तमान में सुर्खियों में रहने वाला विषय है जिसकी मुख्य धारा साहित्य रूपी वट वृक्ष से जुड़कर उसे पोषण प्रदान कर पल्लवित कर रही हैं। समाज में स्त्री जीवन के यथार्थ संबंधी स्त्रीवादी चिन्तकों की तीन धारणाएं मुख्य रूप से प्रचलित हैं–

- स्त्री द्वारा स्त्री के लिए किया गया लेखन।
- स्त्री के लिए किया गया लेखन।
- स्त्री का आत्मानुभूति पूर्ण लेखन।

आलोचकों का प्रायः मानना है कि स्त्री लेखिका द्वारा किये गये स्त्री लेखन में स्त्रीवादी विचारधारा का पक्ष स्त्री होने के कारण रखा जाता है। दूसरी ओर स्त्री को लेखन चाहें स्त्री करें या पुरुष लेखन तो लेखन होता है मानवीय मन व मनोवैज्ञानिक आधार पर उस पीड़ा का अनुभव करना स्वाभाविक है। तीसरी धारणा के अनुसार सहानुभूति अवश्य प्रकट की जा सकती है परन्तु उसके समान विचार रखकर लेखन करना संभव नहीं क्योंकि प्रत्येक वस्तु को देखने का दृष्टिकोण सभी मनुष्यों में भिन्न होता है और प्रत्येक विमर्श अनुभवों की अभिव्यक्ति का प्रमाण हैं।

स्त्री चिन्तन की अवधारणा में अद्यतन स्त्री जीवन के यथार्थ को शोषण, संघर्ष, चेतना, मुक्ति आदि दृष्टिकोण से देखा जाता रहा है। परन्तु क्या ? समाज से नारी का संबंध व अन्तर्द्वन्द्व ही स्त्री जीवन का यथार्थ है। जिसमें नारी विषयक दृष्टिकोण सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है। आज की स्त्री की दृष्टि से देखा जाए तो उत्तर होगा, नहीं। इस स्त्री जीवन के यथार्थ का मूल्याकंन करने पर स्त्री केवल अबला, पीड़ित, शोषित, असहाय के रूप में पुरुषों के आगे शक्तिहीन बतायी गयी हैं। पुरुष प्रधान समाज में साहित्यिक आंदोलनों के माध्यम से प्रवासी भारतीय लेखिकाओं द्वारा अपनी मौलिक अभिव्यक्तियों में नारीवादी विचारधारा को बदलते दृष्टिकोण की एक मुक्कमल तस्वीर के रूप में उभारा गया है। इन लेखिकाओं द्वारा आत्मस्वीकारोक्ति शैली में समाज के बंधनों को नकारती हुई, संवेदनशील प्रेम को प्राप्त करने की मंषा रखने वाली, परन्तु परिवार के बंधनों को अस्वीकार करती हुई नायिकाओं को अपने उपन्यासों में उतारा गया हैं। जैसे हर नदी अपना रास्ता खुद बनाती है वैसे ही स्त्री अब अपने मार्ग को निर्धारित कर चुकी है।

आज तक नैतिकता, जीवन मूल्यों, अनुशासन, परम्पराओं व मर्यादा जैसे परम्परागत ढर्रों पर स्त्री मन को सामाजिकता के तराजू पर तोलकर उसकी स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाया जाता रहा है।

परन्तु प्रवासी भारतीय लेखिकाओं के उपन्यासों में युगों से शोषण का शिकार रही स्त्री की व्यथा को परिवर्तित संदर्भों में समाज के समक्ष चुनौती के रूप में प्रस्तुत किया है। प्रवासी साहित्य के नारी पात्र शोषण सहन करने वाली अबला नारी नही अपितु आधुनिकता से पूरित है जिसने समाज की संकीर्ण मानसिकता को बदलने के लिए प्रेरित कर दिया है। बंधनों को तोड़कर मुक्ति के मार्ग की ओर अग्रसर नारी का नवीन रूप प्रवासी भारतीय लेखिकाओं के उपन्यासों में देखने को मिलता है।

प्रवासी भारतीय लेखिकाओं की तैनात फौज में उषा प्रियंवदा, अचला शर्मा, अर्चना पैन्यूली, अनवर नसरीन, अमिता तिवारी, इरा सक्सेना, इला प्रसाद, इंदिरा आनन्द, उषा वर्मा, ऊषा राजे सक्सेना, कमला दत्त, कविता वाचकनवी, कादंबरी मेहरा, कुंती मुखर्जी, गगन गिल, जकिया जुबैरी, तोषी अमृता, दिव्या माथुर, दीपिका जोशी, नीना पॉल, नीरा त्यागी, नीलम जैन, पुष्पा भार्गव, पुष्पा सक्सेना, पुष्पिता अवस्थी, प्रतिभा सक्सेना, पूर्णिमा वर्मन, भावना कुंअर, भावना सक्सेना, मनीषा श्री, रचना श्रीवास्तव, रेखा मेत्रा, रेणु राजवंशी गुप्ता, लक्ष्मी शुक्ला, वीणा विज उदित, वंदना मुकेश, शैल अग्रवाल, शैलजा सक्सेना, संचिता भट्ट, सफिया सिद्दीकी, सरिता मेहता, सलमा जैदी, सीमा खुराना, सुदर्शन प्रियदर्शिनी, सुधा ओम ढींगरा, सुषम बेदी, सोमा वीरा, संजीता आनंद, स्नेह ठकोर, स्वाति भालोटिया आदि का नाम प्रमुख हैं। इन सभी लेखिकाओं ने विदेशी भूमि पर अपने पैर जमाने वाली भारतीय स्त्रियों के यथार्थ का सटीक विश्लेषण किया है। प्रवासी भारतीय लेखिकाओं में उपन्यास की आधारशिला को सुदृढ़ करने का श्रेय उषा प्रियंवदा को जाता है। इनके उपन्यासों की नायिकाओं ने स्त्री जीवन के वास्तविक यथार्थ की सशक्त अभिव्यक्ति प्रस्तुत करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। **पचपन खम्भें लाल दीवारें** की सुषमा द्वारा भारतीय नारी की सामाजिक, आर्थिक विवशताओं, मानसिक यंत्रणाओं, ऊब व घुटन के वातावरण में झटपटाहट तथा पुरुष सत्तात्मक समाज की संकीर्ण मानसिकता से दबी हुई स्त्री का चित्रण किया है। **रुकोगी नहीं, राधिका** उपन्यास की राधिका के माध्यम से अकेली स्त्री के अनुभवों, **शेष यात्रा** उपन्यास की अनु नारी मन की कोमलताओं व स्वाभिमान की रक्षा हेतु जीवन संघर्ष करते नारी पात्रों की अभिव्यक्ति की हैं। **अन्तर्वंशी** उपन्यास की वाना के माध्यम से प्रवास के दौरान मोह भंग व संबंधों में संघर्ष को व्यक्त किया है वहीं **भया कबीर उदास** में अधूरे तन के बावजूद जीवन से पूरे हिस्से की मांग करते स्त्री मन को व्यक्त किया है। नीना पॉल के उपन्यासों में **रिहाई, तलाश** व **कुछ गांव–गांव कुछ शहर–शहर** में विदेशी धरती पर अपने पैर जमाने में आयी समस्याओं और वर्ण भेद के साथ स्त्री की समस्या को चित्रित किया गया है। अर्चना पैन्यूली का **परिवर्तन** उपन्यास आत्मानुभूतिपूर्ण शैली में गूंथा हुआ नायिका रतना के जीवन की गाथा प्रस्तुत करता है। **वेयर डू आई बिलांग** उपन्यास की नायिका रीना का दो भिन्न संस्कृतियों से संघर्ष बताया है तो दूसरी ओर **पॉल की तीर्थयात्रा** स्त्री पुरुष संबंधों में सकारात्मक विचारधारा

वाले नीना व पॉल की कहानी है। दिव्या माथुर का **शाम भर बातें** प्रवासी समाज की दशा और दिशा की ओर इंगित करता हुआ विचारोत्तेजक उपन्यास है। पुष्पा सक्सेना के उपन्यासों में चित्रित नारी पात्र **वह सांवली लड़की** की अंजू, **लौट आओ तुम** की मीता और'अल्का, **ऋचा** उपन्यास की ऋचा, **देवयानी** उपन्यास की कल्याणी और देवयानी और **बांहों में आकाश** उपन्यास पुरुष से समकक्षता, कामकाजी महिला, स्वाभिमानी, जागरूक, स्वतंत्र विचारों से ओत–प्रोत व शिक्षित वर्ग के द्योतक हैं। रेणु राजवंशी गुप्ता के उपन्यास **तमसो मा ज्योतिर्गमय** व **मृत्योर्मामृतं गमय** आधुनिक राजतंत्र, अफसरशाही और समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार के यथार्थ को प्रस्तुत करते हैं। स्नेह ठाकुर के उपन्यास **कैकेयी चेतना शिखा** व **श्रीराम प्रिया सीता** ऐतिहासिक व आध्यात्मिक धरातल पर रची वे कृतियां हैं जिनके नारी पात्रों ने पुरुष सत्तात्मक समाज से सहयोगी होने का आह्वान करते हुए स्त्री जाति पर आधिपत्य को समाप्त करने की उद्घोषणा भी की है। सुदर्शन प्रियदर्शिनी का **जलाक** दो संस्कृतियों में अन्तर्द्वन्द्व का विस्फोट करता हुआ बोल्ड उपन्यास है। **रेत के घर** उपन्यास पाश्चात्य संस्कृति में बिखरते संबंधों को सहेजने का प्रयास है। **न भेज्यो विदेस** व **अब के बिछुड़े** उपन्यास स्त्री पुरुष के प्रति प्रेम की कर्मठता का परिचायक है, जिसमें सारा संसार शून्य प्रतीत होता है। **सूरज नहीं उगेगा** और **अरी ओ कनिका** लघु उपन्यासों के नारी पात्र आभा, वीना व कनिका बिखरते स्त्री संबंधों का यथार्थ और आधुनिक लिव इन रिलेशनशीप को दर्शाते हुए अपनी पीड़ा से संघर्ष करते हैं। सुधा ओम ढींगरा ने अपने उपन्यास **नक्काशीदार केबिनेट** में सोनल और मीनल जैसी नायिकाओं के संघर्ष को प्रभावशाली ढंग से उभारा हैं। उषा देवी विजय कोल्हटकर के उपन्यास **जमी हुई बर्फ, खोया हुआ किनारा** व **प्रलय के पार** में उस स्त्री का चित्रण किया है जो देह धर्म में लिप्त, भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद, बाजारवाद व भोग के परिवेश में कैद भोगवाद की वस्तु बनती जा रही हैं। सुषम बेदी के उपन्यास **हवन** की राधिका जहां भारतीय मूल्यों व संस्कारों के निर्माण का हवन करती नजर आती है तो **लौटना** की मीरा व **कतरा दर कतरा** की शशि पितृसत्ता की शिकार स्त्री अस्मिता को खोजती दिखाई देती हैं। **इतर** उपन्यास अंधविश्वासों की कड़ी तोड़ता और **गाथा अमरबेल** की नारी मन की तह खोलता हुआ दर्शाया गया है। **नवाभूम की रस कथा** उपन्यास में प्रवासी पीड़ा को झेलती पराभूमि पर प्रेम व अपने अस्तित्व को तराशती स्त्री का प्रभावी चित्रण किया है। इसी श्रेणी में सुषम बेदी ने स्त्री मानदण्डों की चौखट को लांघ कर नारी मन से उखाड़–पछाड़ करते हुए स्त्री पात्रों को अपने उपन्यास **मोरचे, मैंने नाता तोड़ा** व **पानी केरा बुदबुदा** में दर्शाया गया है। पुष्पिता अवस्थी ने अपने उपन्यास **छिन्नमूल** में प्रवासी जन–जीवन की गाथा को व्यक्त करते हुए नायिका ललिता के माध्यम से भारतवंशी मन के द्वन्द्व को उद्घाटित किया है। मीनाक्षी पुरी के उपन्यासों की कथाएं जर्मनी के प्रवासी जीवन पर आधारित हैं। इनके उपन्यास **जाने पहचाने अजनबी** में भारतीय स्त्री की भांति

विदेशी लड़कियों के हृदय में हिंडोलें लेते सम्मोहन के स्वप्नों को चित्रित किया गया है। वहीं **सात फेरे अधूरे** उपन्यास में विवाहोपरान्त प्रवास में स्त्री जीवन की कशमकश और **देश निकाले** उपन्यास में बार–बार तलाक व पुनर्विवाह के कारण स्त्री मन को लगने वाले आघातों का चित्रण कर उपन्यासों की कथा का ताना–बाना बुना है। कमलेश चौहान के उपन्यास **सात समन्दर पार, सात फेरों से धोखा** और **सात जनम के बाद** उपन्यास में विदेश का भ्रम पाले व द्वन्द्वग्रस्त जीवन का उद्घाटन किया है। सुनिता जैन ने अपने उपन्यास **बोज्यू** में नायिका मुक्ता के माध्यम से युवा मानस की कोमलता व विवाह विसंगतियों, **सफर के साथी** की नीरजा मानसिक टूटन और पुनःस्थिरता, **बिन्दू** उपन्यास की बिन्दू जीवन जीने की अभिलाषा और जीवन्तता की परिचायक है। वहीं **मरणातीत** और **अनुगंज** उपन्यास में स्त्री जीवन की विडम्बना और उससे पुनः उभरने का साहस दिखाती स्त्री की कहानी है।

इन सभी उपन्यासों में पाश्चात्य संस्कृति के साथ रेगिस्तानी कैक्टस की भांति कशमकश करती स्त्री, नारी मनोविज्ञान को प्रदर्शित करते स्त्री पात्र और पुरुष सत्तात्मक समाज में अपने वजूद को तलाशती स्त्री मन की ऊहापोह को व्यक्त किया हैं। प्रवासी लेखिकाओं के उपन्यासों में इसी प्रकार की परिवर्तनशील कशमकश देखने को मिलती हैं। जिसमें स्त्री के वस्त्रों के भीतर छिपी नग्नता को दिखाने के बजाए स्त्री को स्त्री के रूप में देखने के लिए मजबूर किया जा रहा है और सागर के दो किनारों स्त्री व पुरुष को एक क्षितिज पर लाने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रस्तावित शोध में जिस स्त्री जीवन के यथार्थ का प्रवासी भारतीय लेखिकाओं के उपन्यासों को आधार बनाकर हम अध्ययन करेंगे उसमें स्त्री का रूप नितान्त भिन्न होगा। स्त्रीवादी चिन्तन के जिस पहलू को केन्द्र में रखकर विचारों की अभिव्यक्ति की जाएगी वह अब तक किये गये शोधों से नवीन रूप लिये होगा। स्त्री मुक्ति से तात्पर्य आज के समाज में पुरुष से मुक्ति को माना जाता है। परन्तु प्रस्तावित शोध के माध्यम से स्त्री मुक्ति का ऐसा तात्पर्य लेकर चलने वालों को नवीन दिशा की प्राप्ति होगी कि स्त्री जीवन का वास्तविक यथार्थ पुरुष से मुक्ति नहीं पितृसत्तात्मक संकीर्ण विचारधाराओं से मुक्ति है। समाज में स्त्रीवादी चिन्तन द्वारा नारी के प्रति विचारों में परिवर्तन कर साहित्य के माध्यम से प्रेरित करना है। इस परिवर्तन में प्रभुत्व, सत्ता की प्राप्ति, हिंसा आदि का कोई स्थान नहीं, इस परिवर्तन में स्त्री पुरुष समकक्षता व स्त्री पर पुरुष के आधिपत्य से स्वतंत्रता का संघर्ष है। स्त्री स्वतंत्रता का अर्थ उच्छृंखलता नहीं बल्कि स्त्री द्वारा स्वयं की देह व बुद्धि का उचित मूल्यांकन करना है क्योंकि प्रवासी भारतीय लेखिकाओं के कथा उपन्यासों के नारी पात्र पुरुष के साथ बराबरी करना चाहते हैं, पुरुष अवश्य उन्हें नहीं बनना न ही किसी पर प्रभुत्व व सत्ता की लालसा उन्हें हैं, वे तो बस अपने अधिकार प्राप्त करना चाहती हैं। शारीरिक संरचना के आधार पर जिस

प्रकार स्त्री को नीचा दिखाया जाता है, स्त्री उसी दैहिक भिन्नता को ताक में रखकर विचारों के अन्तर्द्वन्द्व से लड़ना चाहती हैं। प्रस्तावित शोध द्वारा स्त्री चिन्तन के साहित्यिक आंदोलन को नवीन दिशा प्राप्त होगी, साथ ही समाज के समक्ष स्त्री जीवन के वास्तविक यथार्थ को विस्तृत जानकारी के साथ नवीन अवधारणा के रूप में संपादित किया जायेगा।

प्रस्तावित शोध का उद्देश्य (Objectives of Proposed research):–

1. प्रवासी भारतीय लेखिकाओं के उपन्यासों का अध्ययन करना।
2. स्त्रीवादी चिन्तन संबंधी सभी मतों का अध्ययन करते हुए समाज को वास्तविक स्त्री जीवन के यथार्थ से परिचित कराना।
3. स्त्री जीवन के यथार्थ संबंधी प्रवासी लेखिकाओं के नवीन अनुभवों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना।
4. स्त्रीवादी चिन्तन द्वारा समाज और साहित्य को प्रभावित करने वाले व नवीन दिशा प्रदान करने वाले तत्वों को उद्घाटित करना।
5. स्त्री जीवन के यथार्थ पर चिन्तन की नवीन अवधारणा को परिभाषित कर साहित्य में उसका अध्ययन करना प्रस्तावित शोध का मुख्य उद्देश्य है। पुरुष से मुक्ति का संघर्ष स्त्री जीवन का यथार्थ नहीं है अपितु पुरुष के समकक्ष खड़ी स्त्री पुरुष प्रधान समाज की संकीर्ण मानसिकता से मुक्ति चाहती हैं इस अवधारणा को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना।

5. प्रस्तावित शोध पर पूर्व में किये गए शोध कार्य का पुनरावलोकन

Review (Work already done on the Subject of proposed Research Study):–

पूर्वज्ञान के आधार पर ही नवीन ज्ञान की नींव रखी जाती है। पूर्वज्ञान के द्वारा शोध की योजना तैयार की जाती है और निर्धारित योजनानुसार लक्ष्य प्राप्ति संभव है। परन्तु योजना निर्धारण करने से पूर्व चिन्तन अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि यहीं चिन्तन शोध को उद्देश्यपूर्ण व गतिशील बनाता है। प्रस्तावित शोध विषय को दृष्टिगत रखते हुए किये गये पुनरावलोकन द्वारा अब तक स्त्रीवादी चिन्तन पर वृहत् पैमाने में शोध कार्य हो चुका हैं। परन्तु प्रवासी महिला लेखिकाओं के उपन्यासों पर नही।

इससे पूर्व संबंधित विषय पर किया जा चुका शोध कार्य निम्नानुसार है–

1. हिन्दी का भारतीय एवं प्रवासी महिला कथा लेखन–2013–शोध ग्रंथ
2. पाश्चात्य पृष्ठभूमि पर नारी विमर्श की अवधारणा–2011 हिन्दी चेतना– आलेख
3. प्रवासी कथाओं में स्त्री विमर्श–2014 हिन्दी चेतना– लेख
4. सुषम बेदी के उपन्यासों में प्रवासी स्त्री यथार्थ–2016 स्त्रीकाल– लेख
5. प्रवासी साहित्य की अवधारणा और स्त्री कथाकार–2016 वेबदुनिया– लेख
6. प्रवासी कथा साहित्य और स्त्री–2012 देशबंधु– लेख
7. प्रवासी महिला कथाकारों की कथाओं में स्त्री–2012 शरदाक्षर– शोधपत्र

प्रस्तुत शोध कार्य से ज्ञात होता है कि भारतीय व प्रवासी महिला लेखन पर शोध कार्य हो चुका है तथा कथा साहित्य को आधार बनाकर स्त्री विमर्श से संबंधित विभिन्न विषयों को सम्मिलित कर लेख, आलेख व शोधपत्र के रूप में शोध कार्य किया जा चुका हैं परन्तु प्रस्तावित शोध में इन बिखरे हुए मोतियों को एक सूत्र में पिरोकर जिस माला का निर्माण किया जाएगा वह समाज के हृदय पर सदैव सुशोभित होगी। प्रस्तावित शोध में स्त्री जीवन के यथार्थ को एक नवीन परिभाषा, नवीन आयामों व नवीन परिवेश में उभारा जाएगा। जिसमें स्त्री शोषित, पीड़ित, दयनीय दशा से युक्त नहीं अपितु अपने वर्चस्व को प्राप्त करने हेतु संघर्षशील दिखाई देगी। अब तक हुए शोध में वह शोषण का विरोध कर लड़ रही थी पर आज स्त्री के जीवन का जो यथार्थ प्रस्तुत होगा, वह पुरुष के साथ बराबरी व समानता का होगा।

6. प्रस्तावित शोध कार्य व संबंधित विषय से पूर्व में हुए शोध कार्य में अन्तराल

Proposed Research work and gap in the previous research work with related subject. (Based on the review) :–

प्रस्तावित शोध पर अब तक कोई भी शोध कार्य नहीं हुआ और जो हुआ है, वह बिखरा हुआ है। प्रस्तावित शोध द्वारा इन बिखरे हुए पक्षों को एकत्रित कर संजोया जाएगा, जिससे एक सार्थक व सफल शोध की प्राप्ति हो सकें। साथ ही शोध से संबंधित सम्पूर्ण तथ्य एक ही ग्रंथ में उपलब्ध होने पर भावी पीढ़ी को अध्ययन में सहायता प्रदान करने में योगदान देगा। अतः यह कहना उचित होगा कि स्त्री जीवन के वास्तविक यथार्थ को नवीन रूप और प्रवासी भारतीय लेखिकाओं के उपन्यासों के अध्ययन पर अभी तक किसी की दृष्टि नहीं पड़ी है। अतः प्रस्तावित शोध में नवीन विषय के साथ समाज में स्त्री की नवीन सृष्टि का अध्ययन कर शोध किया जाएगा, जो समाज व भावी पीढ़ी को उन्नति के प्रशस्त मार्ग की ओर ले जाएगा। साथ ही यह शोध प्रवासी भारतीय लेखिकाओं पर अब तक हुए शोध अन्तराल को समाप्त करने का प्रयास करेगा।

7. मुख्य परिकल्पना Major Hypothesis, if any :–

वर्तमान समाज में स्त्रीवादी आंदोलनों में महिला लेखिकाओं के स्त्रीवादी लेखन ने प्रमुख भूमिका निभाई है। प्रस्तावित शोध के माध्यम से स्त्रीवादी चिन्तन की नवीन संकल्पना को प्रस्तुत कर पाश्चात्य स्तर पर किये गये स्त्री लेखन का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। जिससे वैश्विक स्तर पर पहुंची स्त्री जीवन के यथार्थ की शाखाओं को एक नवीन साम्यवादी विचारधारा के रूप में खोजा जा सकें। जिसमें स्त्री पुरुष के समान अधिकारों की बात हो। साहित्य के क्षेत्र में जितनी स्त्रीवादी लेखन की जड़ें भारतीय लेखिकाओं द्वारा फैलायी जा रही है, उन्हें पोषण प्रदान करने का कार्य प्रवासी भारतीय लेखिकाओं द्वारा किया जा रहा है। विदेशी भूमि पर रहने वाली इन लेखिकाओं के लेखन की अवधारणा को प्रस्तुत तो किया जाएगा ही साथ ही अभिव्यक्ति व वातारण में पर्याप्त अन्तर के दोनों पक्षों पर चिन्तन भी किया जाएगा। प्रस्तावित शोध में स्त्री जीवन के यथार्थ की खाई में उतर कर स्त्री की वास्तविक स्थिति को खोजने का प्रयत्न किया जाएगा।

8. शोध कार्यक्षेत्र व प्रविधि Research Methodology :–

प्रस्तावित शोध में प्रवासी भारतीय लेखिकाओं से संबंधित क्षेत्रों को कार्यक्षेत्र के रूप में सम्मिलित किया जाएगा। प्रस्तुत शोध में प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ों का संकलन भी किया जाएगा।

(क) प्राथमिक आंकड़ों का संग्रह संबंधित लेखिकाओं के साक्षात्कार व प्रश्नावली के माध्यम से किया जाएगा।

(ख) द्वितीयक आंकड़ों का संग्रह विषय से संबंधित व उपलब्ध साहित्य आलेखों, शोध पत्रों, प्रतिवेदनों, पुस्तकों, हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, इंटरनेट आदि पर उपलब्ध विषय से संबंधित सामग्री का संग्रह किया जाएगा।

9. अध्याय योजना (Chapterization)

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय– स्त्री जीवन का यथार्थ : एक विश्लेषण

1.1 स्त्री जीवन का यथार्थ का अर्थ एवं परिभाषा

1.2 स्त्रीवादी चिन्तकों की अवधारणाएं

1.2.1 भारतीय विचारधारा

1.2.2 पाश्चात्य विचारधारा

1.3 स्त्री जीवन का यथार्थ–अंतर्यात्रा

1.3.1 पूर्व साहित्य में स्त्री विमर्श

1.3.2 आधुनिक साहित्य में स्त्री विमर्श

1.4 स्त्रीवादी चिन्तन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

1.4.1 भारतीय परिप्रेक्ष्य में

1.4.2 पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य में

द्वितीय अध्याय– प्रवासी भारतीय लेखिकाएं और उनके उपन्यास

2.1 अमेरिका से प्रवासी भारतीय लेखिकाएं

2.1.1 उषा प्रियंवदा

2.1.2 सुनिता जैन

2.1.3 उषा देवी विजय कोल्हटकर

2.1.4 पुष्पा सक्सेना

2.1.5 रेणु राजवंशी गुप्ता

2.1.6 सुदर्शन प्रियदर्शनी

2.1.7 सुधा ओम ढींगरा

2.1.8 सुषम बेदी

2.1.9 कमलेश चौहान

2.2 ब्रिटेन से प्रवासी भारतीय लेखिकाएं

2.2.1 दिव्या माथुर

2.2.2 नीना पॉल

2.3 डेनमार्क से प्रवासी भारतीय लेखिका

2.3.1 अर्चना पैन्यूली

2.4 कनाडा से प्रवासी भारतीय लेखिका

2.4.1 स्नेह ठाकुर

2.5 सूरीनाम से प्रवासी भारतीय लेखिका

2.5.1 पुष्पिता अवस्थी

2.6 जर्मनी से प्रवासी भारतीय लेखिका

2.6.1 मीनाक्षी पुरी

तृतीय अध्याय– प्रवासी भारतीय लेखिकाओं के उपन्यासों में स्त्री जीवन का यथार्थ : बदलते परिप्रेक्ष्य में

3.1 नारी जीवन की विभिन्न अनुभूतियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

3.1.1 दोहरी मानसिकता के साथ संघर्ष

3.1.2 प्रवासी मन भारतीय संस्कारों युक्त .

3.1.3 स्त्री का अनुभव एकांकी जीवन यापन

3.1.4 व्यक्तित्व विघटन से विकास की ओर अग्रसर

3.1.5 पारिवारिक मतभेद और बिखरते संबंधों में स्त्री निजता का प्रश्न

3.1.6 मानवीय संवेदना और मानवीय मूल्यों की खोज

3.2 नारी पात्रों का अन्तर्द्वन्द्व पुरुष सत्तात्मक विचारधारा से

3.2.1 माता के रूप में

3.2.2 पुत्री के रूप में

3.2.3 पत्नी के रूप में

3.2.4 प्रेयसी के रूप में

3.2.5 पुत्रवधू के रूप में

3.2.6 स्त्री के रूप में

3.3 नारी संवेदना और जीवन मूल्य

3.3.1 पीढ़ीगत अन्तर

3.3.2 अति आधुनिकता

3.3.3 जीवनयापन

3.3.4 कामकाजी महिलाएं

3.3.5 स्त्री का बोल्ड रूप

3.4 दैहिक व मानसिक स्वतंत्रता

3.5 नारी अस्मिता के प्रति जागरूकता

चतुर्थ अध्याय– भूमंडलीकरण के प्रभाव से स्त्री जीवन का यथार्थ और पितृसत्ता परिवर्तित संदर्भ में

4.1 स्त्री पुरूष की सामाजिक समकक्षता

4.1.1 भारतीय परिवेश

4.1.2 पाश्चात्य परिवेश

4.2 स्त्री पुरूष की भागीदारी : राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में

4.2.1 भारतीय न्याय व्यवस्था में स्त्री पुरूषों के अधिकार

4.2.2 पाश्चात्य न्याय व्यवस्था में स्त्री पुरूषों के अधिकार

4.3 प्रवासी सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित स्त्री पुरूष समकक्षता

4.3.1 दो भिन्न संस्कृतियों में टकराहट

4.3.2 भारतीय संस्कारों का आत्मसातीकरण

4.3.3 पाश्चात्य समाज और संस्कृति

4.3.4 परम्परा और परिवेश

4.3.4.1 लिव इन रिलेशनशिप

4.3.4.2 प्रेम प्रसंग

4.3.4.3 पुनर्विवाह

4.3.4.4 विवाह–विच्छेद

4.3.5 यौन स्वतंत्रता

4.4 भूमंडलीकरण और स्त्री जीवन का यथार्थ

4.4.1 मानवीय मूल्यों में स्त्री अधिकारों की खोज

4.4.2 यांत्रिकता और संवेदनहीनता से व्यथित स्त्री

4.4.3 भारतीय मूल्य का पुनर्मूल्यांकन और स्थापना

4.4.4 स्त्री को अबला मानने वालों की विरोधिनी

पंचम अध्याय– प्रवासी भारतीय लेखिकाओं के उपन्यासों अभिव्यक्त स्त्री पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

5.1 प्रवासी भारतीय लेखिकाओं के स्त्री पात्रों के तीन रूप

5.1.1 पश्चिमी संस्कृति व परिवेश में ढलने वाली स्त्री

5.1.2 भारतीय व पाश्चात्य में समायोजन करने वाली स्त्री

5.1.3 अवसाद और निराशाग्रस्त विद्रोह करने वाली स्त्री

5.2 पुरुष मानसिकता से मुक्ति

5.3 अस्तित्व प्राप्ति के जुनून की कशमकश

5.4 स्त्री पात्र अंतर्द्वन्द्वों के विस्फोट का बारूद

5.5 प्रेम की कर्मठता

5.6 पराभूमि पर अस्तित्व और अस्मिता की तलाश

5.7 निर्धारित मानदण्डों को लांघ कर संघर्ष

5.8 स्वानुभूति और सहानूभूति से युक्त

षष्टम अध्याय– चयनित प्रवासी भारतीय लेखिकाओं के साक्षात्कार

सप्तम अध्याय– उपसंहार–प्रवासी लेखिकाओं के उपन्यासों में स्त्री जीवन का यथार्थ : एक नवीन विचारधारा के रूप में

7.1 प्रवासी लेखिकाओं के उपन्यासों में स्त्री जीवन का यथार्थ

7.2 प्रवासी महिला लेखिकाओं का स्त्रीवादी चिन्तन में नवीन योगदान

10. संदर्भ ग्रंथ सूची (Biblography)

आधार ग्रंथ सूची

➢ प्रवासी महिला लेखिकाओं के उपन्यास

1. पैन्यूली अर्चना	परिवर्तन	अभिरुचि प्रकाशन, दिल्ली	2003
2. पैन्यूली अर्चना	वेयर डू आई बिलांग	भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली	2010
3. पैन्यूली अर्चना	पॉल की तीर्थयात्रा	राजपाल एंड सन्स, दिल्ली	2016
4. कोल्हटकर विजय देवी उषा	जमी हुई बर्फ	दिशा प्रकाशन, जयपुर	1998
5. कोल्हटकर विजय देवी उषा	खोया हुआ किनारा	दिशा प्रकाशन, जयपुर	2006
6. कोल्हटकर विजय देवी उषा	प्रलय के पार	दिशा प्रकाशन, जयपुर	2016
7. प्रियंवदा उषा	पचपन खंभे लाल दीवारें	राजकमल प्रकाशन,दिल्ली	1961
8. प्रियंवदा उषा	रूकोगी नहीं राधिका	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1966
9. प्रियंवदा उषा	शेष यात्रा	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1984
10. प्रियंवदा उषा	अन्तर्वंशी	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	2000
11. प्रियंवदा उषा	भया कबीर उदास	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	2007
12. चौहान कमलेश	सात् समुन्दर पार	यूनिस्टार बुक्स, चंडीगढ़	2005
13. चौहान कमलेश	सात फेरों से धोखा	यूनिस्टार बुक्स, चंडीगढ़	2010
14. चौहान कमलेश	सात जनम के बाद	बोधी प्रकाशन, जयपुर	2005
15. माथुर दिव्या	शाम भर बातें	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	2014
16. पॉल नीना	रिहाई	सुनील साहित्य सदन, दिल्ली	2007
17. पॉल नीना	तलाश	अयन प्रकाशन, दिल्ली	2009
18. पॉल नीना	कुछ गांव–गांत कुछ शहर–शहर	यश प्रकाशन,दिल्ली	2012
19. सक्सेना पुष्पा	वह सांवली लड़की	यात्री प्रकाशन, दिल्ली	1995
20. सक्सेना पुष्पा	ऋचा	निर्मल प्रकाशन, कोलकत्ता	2006
21. सक्सेना पुष्पा	बाहों में आकाश	यात्री प्रकाशन, दिल्ली	2009
22. सक्सेना पुष्पा	लौट आओ तुम	समृद्धि प्रकाशन, महाराष्ट्र	2011
23. सक्सेना पुष्पा	देवयानी	समृद्धि प्रकाशन, महाराष्ट्र	2016

24. अवस्थी पुष्पिता	छिन्नमूल	अंतिका प्रकाशन, उत्तरप्रदेश	2016
25. पुरी मीनाक्षी	जाने पहचाने अजनबी	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली	1977
26. पुरी मीनाक्षी	सात फेरे अधूरे	अक्षर प्रकाशन, दिल्ली	1982
27. पुरी मीनाक्षी	देश निकाले	अक्षर प्रकाशन, दिल्ली	1993
28. पुरी मीनाक्षी	तशतरी में तूफान	प्रवीण प्रकाशन, दिल्ली	1995
29. गुप्ता राजवंशी रेणु	तमसो मा ज्योतिर्गमय	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली	2010
30. गुप्ता राजवंशी रेणु	मृत्योर्मामृतं गमय	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली	2012
31. ठाकुर स्नेह	कैकेयी चेतना शिखा	स्टार प्रकाशन, आगरा	2012
32. ठाकुर स्नेह	श्रीराम प्रिया सीता	स्टार प्रकाशन, आगरा	2017
33. प्रियदर्शिनी सुदर्शन	जलाक	आधारशिला प्रकाशन, मुखानी	2009
34. प्रियदर्शिनी सुदर्शन	रेत के घर	भावना प्रकाशन, दिल्ली	2009
35. प्रियदर्शिनी सुदर्शन	अब के बिछुड़े	नमन प्रकाशन, दिल्ली	2014
36. प्रियदर्शिनी सुदर्शन	न भेज्यो विदेस	नमन प्रकाशन, दिल्ली	2014
37. ढींगरा ओम सुधा	नक्काशीदार केबिनेट	शिवना प्रकाशन, मध्यप्रदेश	2016
38. जैन सु[illegible]ता	बोज्यू	हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली	1964
39. जैन सुनिता	सफर के साथी	पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली	1966
40. जैन सुनिता	बिन्दु	पराग प्रकाशन, दिल्ली	1977
41. जैन सुनिता	मरणातीत	पराग प्रकाशन, दिल्ली	1977
42. जैन सुनिता	अनगूंज	पराग प्रकाशन, दिल्ली	1977
43. बेदी सुषम	हवन	अभिरुचि प्रकाशन, दिल्ली	1989
44. बेदी सुषम	लौटना	पराग प्रकाशन, दिल्ली	1992
45. बेदी सुषम	कतरा दर कतरा	अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली	1994
46. बेदी सुपम	इतर	नेशनल पब्लिकेशन्स हाऊस, दिल्ली	1998
47. बेदी सुषम	गाथा अमरबेल की	नेशनल पब्लिकेशन्स हाऊस, दिल्ली	1999
48. बेदी सुषम	नवाभूम की रसकथा	नेशनल पब्लिकेशन्स हाऊस ,दिल्ली	2002
49. बेदी सुषम	मोरचे	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	2006
50. बेदी सुषम	मैंने नाता तोड़ा	भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली	2009
51. बेदी सुषम	पानी केरा बुदबुदा	किताबघर प्रकाशन, दिल्ली	2017

➢ आलोचनात्मक ग्रंथ

1. अनत अभिमन्यु, हम प्रवासी प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 2013
2. गोयनका किशोर कमल, हिन्दी का प्रवासी साहित्य, अमिता प्रकाशन, दिल्ली 2011
3. गोयनका किशोर कमल, प्रवासी साहित्य जोहान्सबर्ग से आगे, विदेश मंत्रालय भारत सरकार साउथ ब्लॉक सीता फाइन आर्टस् प्रा.लि. , दिल्ली 2015
4. कामता कमलेश, सागर पार भारतीय संस्कृति और हिन्दी , समीक्षा पब्लिकेशन्स, दिल्ली 2007
5. सहाय कुमारी , प्रवासी भारतीयों की हिन्दी सेवा , अविराम प्रकाशन, दिल्ली 1994
6. डॉ. खेमसिंह डहेरियन, उपनिवेशवाद से आधुनिकतावाद तक स्त्री कथा, अध्ययन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली 2011
7. स्टुअर्ट जॉन, स्त्रियों की पराधीनता राजकमल प्रकाशन, , दिल्ली 2002
8. सिंह नमिता , स्त्री प्रश्न वाणी प्रकाशन, दिल्ली 2017
9. वर्मन पूर्णिमा , वतन से दूर अयन प्रकाशन, दिल्ली 2011
10. संधु मधु ,महिला उपन्यासकार निर्मल पब्लिकेशन्स, कोलकत्ता 2000
11. डॉ. रमा, प्रवासी हिन्दी साहित्य : विविध आयाम साहित्य संचय प्रकाशन, दिल्ली 2017
12. जायसवाल रंजना , स्त्री और सेंसेक्स सामयिक प्रकाशन, दिल्ली 2001
13. सत्यकेतु, हिन्दी कथा साहित्य : एक दृष्टि राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली 2013
14. वर्मा कांति विमलेश , प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली 2016
15. श्रीधर प्रदीप, प्रवासी हिंन्दी साहित्यः दशा और दिशा, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली 2018

➢ पत्र–पत्रिकाएं

1. अनुसंधान, ,हिन्दी विभाग इलाहबाद विश्वविद्यालय
2. अहा ! जिन्दगी, संपादक आलोक श्रीवास्तव, जयपुर
3. अक्षरपर्व, संपादक सर्वमित्रा सुरजन, रायपुर, छत्तीसगढ़
4. आउटलुक, संपादक राजेश रामचन्द्रन, आउटलुक पब्लिशिंग इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली
5. आधारशिला, दिवाकर, बड़ी मुखानी, हल्द्वानी नैनीताल
6. कथाबिंब, संपादक डॉ. माधव सक्सेना, मुबंई
7. कादम्बिनी, संपादक शशि शेखर, हिन्दुस्तान मीडिया वेचर्स लिमिटेड, आकृति बिल्डिंग, फर्स्ट फ्लोर, सी–164, सेक्टर–63 नोएडा, उत्तरप्रदेश
8. जनकृति, संपादक कुमार गौरव मिश्र 27 गोरख पाण्डेय छात्रावास महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र
9. जनसत्ता, मुकेश भारद्वाज, भारतीय एक्सप्रेस ग्रुप, उत्तरप्रदेश
10. तद्भव, संपादक अखिलेश, 18/201 इंदिरा नगर लखनऊ, उत्तरप्रदेश
11. नवनीत, संपादक सचदेव, विश्वनाथ भारतीय विद्या भवन, मुबंई
12. नवभारत टाइम्स, संपादक गिरीराजशरण अग्रवाल, नई दिल्ली
13. भाषा पत्रिका, केन्द्रिय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली
14. मधुमती, संपादक महावीर सिंह, राजस्थान साहित्य अकादमी सेक्टर–4 हिरण मगरी, उदयपुर, राजस्थान
15. रचना समय, ब्रजनारायण शर्मा, अनिल जनविजय, 197–सेक्टर–बी सर्वधर्म कॉलोनी कोलार रोड, भोपाल
16. वागर्थ, संपादक एकान्त श्रीवास्तव–कुसुम खेमानी, भारतीय भाषा परिषद्, कोलकत्ता
17. समकालीन साहित्य समाचार, संपादक सत्यव्रत 4855–56/24, अंसारी रोड दरियागंज,दिल्ली
18. साक्षात्कार, हरि भटनागर, बाणगंगा चौक भोपाल–3
19. हरिगंधा, संपादक डॉ. कृष्ण कुमार खंडेलवाल, साहित्य अकादमी भवन पी–16 सेक्टर 14 पंचकूला, हरियाणा
20. हंस, संपादक राजेन्द्र यादव, अक्षर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 2/36 अंसारी रोड दरियागंज, दिल्ली
21. हिन्दी चेतना, संपादक निकेतन, 16 साहित्य विहार बिजनौर उत्तर प्रदेश

ई पत्रिकाएं

1. अन्यथा http://www.anyatha.com
2. अनुसंधान शोध पत्रिका, http://www.vangmay.com
3. अपनी माटी, जितेन्द्र यादव, चित्तौड़गढ़, http://www.apnimaati.com
4. गर्भनाल, सुषमा शर्मा
5. गद्यकोश, http://www.gadyakosh.org
6. प्रवासी दुनिया, http://www.pravasiduniya.com
7. मसीही पत्रिका, अमेरिका प्रकाशित, हिन्दी पत्रिका
8. मीडिया विमर्श, श्रीकान्त सिंह 428 रोहितनगर फेस प्रथम भोपाल http://www.hindi.webdunia.com
9. रचनाकार http://www.rachanakar.org
10. वर्तमान साहित्य, विभूति नारायण राय http://www.vartmaansahitya.com
11. विश्वम्भरा
12. शब्दांकन, http://www.shabdankan.com
13. शोध समवाय
14. स्त्रीकाल http://www.streekaal.com
15. साहित्य कुंज, सुमन कुमार घई, http://www.sahityakunj.net
16. हिन्दी कुंज, आशुतोष दुबे, कोलकत्ता, http://www.hindikunj.com
17. हिन्दी समय, सिद्धार्थ शंकर त्रिपाठी, बीरपाल सिंह, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रिय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा
18. हिन्दी साहित्य दर्पण, http://www.sahityadarpan.in

विडियो :–

1. साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित प्रवासी मंच कार्यक्रम, नई दिल्ली
2. हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग का 48वां अधिवेशन
3. हिन्दी साहित्य में स्त्रीवाद–डॉ. राजीव रंजन गिरि

ब्लॉग :–

1. रेनू यादव, प्रवासी कथाओं में स्त्री विमर्श, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा 25 मई 2014
2. vishwahindijan.blogspot.com

12.7.18

Dr. (Mrs.) SUMAN PALASIA

Name and Signature of Supervisior with Date and Seal

डॉ. सुमन पलासिया
शोध पर्यवेक्षक
हिन्दी विभाग

CHANCHAL MEHRA

Signature of Candidate with Date